E ISSN: 2455-1511

Sanskruti International Multidisciplinary Research Journal

Volume V Issue III Jan-Feb-Mar 2020

IFSIJ IMPACT FACTOR: 5.355

URL:www.simrj.org.in Journal UOI:1.01/simrj

INDEXED, PEER-REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

Editor-in-Chief
SANTOSH BONGALE

SANSKRUTI INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Journal homepage: http://www.simrj.org.in Journal UOI: 1.01/simrj

मानवतावाद के विशेष संदर्भ में समकालीन कहानीकारों की सार्वभौमिक दृष्टि

डॉ. सीमा चन्द्रन
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी व तुलनात्मक साहित्य विभाग, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड. केरल-671123
ई-मेल- drseemachandrancukhindi@gmail.com मोबाइल-09447720229

सोलहवीं शताब्दी में 'मानवतावादी' उन लेखकों और शिक्षकों को सूचित करने के लिए कहा जाता था जो 'स्टडिया ह्यूमेनिटेटिस' या 'मानवतावाद' पढ़ाते थे। पुनरुत्थान काल के पूर्व यहाँ यूरोपीय लेटिन संस्कृति पर केन्द्रित व्याकरण, इतिहास, कविता, दर्शन आदि रचा जाता थाजोकि गणित, प्रकृत विज्ञान और थियोलोजी से काफी भिन्न थी। इस समय ये पठन रोमन संस्कृति और क्लासिक्स पर केन्द्रित थी। उन्होंने अधिक ज़ोर अच्छी लेटिन भाषा बोलने और लिखने पर ज़ोर दिया। शिक्षित मानवतावादियों ने कई प्राचीन ग्रंथ ग्रीक और लेटिन में खोजे, संपादित किया और प्रकाशित भी कराया। इस प्रकार यूरोपीय नवोत्थान के दौर में उन्होंने नई सोच और सामग्रियों को इकट्ठा करने में गुणात्मक योगदान दिया। इन मानवतावादियों ने क्लासिक रचनाकारों जैसे अरस्तू, प्लेटो और मुख्यतः सिसेरो पर आधारित कई राजनैतिक, आदर्शपरक और शैक्षणिक साहित्यिक कार्य किए। उन्नीसवीं शताब्दी में मानवीय प्रकृति, सार्वजनिक मूल्य और शैक्षणिक आदर्शों की दृष्टि से एक नया नाम 'मानवतावाद' अस्तित्व में आया। यह नाम उस काल के कई नवोत्थानवादी मानवतावादियों और उसी परंपरा में आनेवाले बाद के कई लेखकों के लिए समान प्रस्थापित चिह्न था।

मानवतावादी उन चिंतकों के लिए प्रयुक्त शब्द है जो मानवीय अनुभवों, कारणों और मानवीय प्रकृति और संस्कृति के मानव-मूल्यों को आत्मसात करते हैं। कुछ लोगों के अनुसार नवोत्थान मानवतावादी वे धार्मिक ईसाई हैं जो ईसाई जाति के भीतर पुराने ज़माने के काफ़िर विचारों और सोच को थोपते हैं। परिणाम यह हुआ कि वह जाति परलोक से अधिक इहलोक के मूल्यों को अपनाने लगी। वे मानते थे कि व्यक्ति केन्द्रित संसार में ऐसा कुछ नहीं हैं जो मानव नहीं कर सकता। पुराने ज़माने की तरह मृत्यु के पश्चात की दुनिया और सांसारिक दुनिया को जोड़कर न देखने की सोच को प्रश्रय दिया। वे कहते थे कि मृत्यु के पश्चात कोई दुनिया नहीं है। मनुष्य अपना कर्ता-धर्ता स्वयं है। फिलिप सिडनी, एडमण्ड स्पेन्सर, ज़ॉन मिल्टन आदि इसे ईसाई मानवतावादी दृष्टि मानते हैं। अठारहवीं सदी में मानवतावादी

सैम्युअल जॉनसन जीवित थे। वे समाज में रहते हुए मानव के सही-गलत की पहचान को मानवीय दृष्टि मानते थे। विक्टोरिया युग के महान मानवतावादी चिंतक मैथ्यू आरनाल्ड ने सामान्य शिक्षा में मानव-विज्ञान के केन्द्रीय पठन पर ज़ोर दिया। उनके अनुसार संस्कृति हमारी मृगीयता से अलग सही मानवीयता का पूर्ण रूप है। जो मानव की सुन्दरता और सत्ता, आत्मीय अभिव्यक्ति की शक्ति को द्योतित करती है। वे मानवतावाद को कविता के संदर्भ में 'जीवन की आलोचना' मानते हैं।

सन् 1980 में जर्मन दार्शनिक 'विलियम डिल्थे' ने प्राकृतिक विज्ञान के वैविध्य की खोज पर प्रभाव डाला जो मानव-विज्ञान और संक्षिप्त एवं घटती सोच का विश्लेषण करती है। इसका लक्ष्य मानव की सांसारिक यथार्थ से परिपूर्ण सत्ता पर ज़ोर डालना था जो मानवीय अनुभवों से अनुप्रेणित है। अमरीकी आंदोलन के अंतिम दशक (1910-1933) में 'नए मानवतावाद' के जनक इरविंग बेबिट्ट और पॉल एल्मर मोर ने पहले प्राथमिक शिक्षा पर ज़ोर दिया जोकि श्रेष्ठ रचनाओं पर आधारित संकीर्ण विचारों के नैतिक, राजनैतिक और साहित्यिक मूल्यों के लिए था। परंतु समकालीन युग में जहाँ हर क्षेत्र में विशेषज्ञ की माँग है वहाँ सार्वजनिक शिक्षा के लिएविस्तृत मानविकी आधार को कम कर दिया गया है। जहाँ पहले मानविकी एक मुख्य विषय था वहाँ आज शिक्षा क्षेत्र में कम से कम एक मानविकी विषय लेने पर ज़ोर दिया जाता है। उत्तर संरचनावादी मानवतावाद को मानव के अस्तित्व का भ्रामक रूप मानते हैं। वास्तव में मानवतावाद मानव के यथार्थ लोक और मानवीय इहलौकिक सत्य पर आधारित है जो ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास नहीं रखता। साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी में भी ऐसे कई साहित्यकार कार्यरत हैं जो मानवीय सत्य को एहम् मानते हैं जोकि सार्वभौमिक है।

सार्वभौमिकता की तीव्र गतिविधियों में स्त्री कहानीकारों की छवि घहराती है। सांस्कृतिक संकट के चक्रव्यूह में परंपरा, परिवेश, आधुनिकता घेरा डाले हुए है। इरादों में छिपी वास्तविकता मानवीय भावनाओं को कटघरे में खड़ा करती है। ये भावनाएँ इंसानी सोच और कृत्रिमता से पनपती भयंकर त्रासदी का प्रमाण है। संवेदनाएँ ऐंन्द्रीय तार से जुड़कर घोर विनाश का क्रंदन पैदा कर रही हैं। भौतिक सुविधाओं में अमानवीकरण के दृश्य-चित्रण सदमन को व्यथित कर रहा है। आपसी ईर्ष्या, द्वेष, स्पर्धा, घृणा, अहम् आदि ने मानव की एकता में दरार डाल दी है। इसे जोड़ने का संकल्प आज साहित्यकार कर रहा है। तभी सार्वभौमिकता की संकल्पना साकार हो सकेंगी। स्त्री कहानीकारों ने इसे देखा, परखा और समझकर समकालीन उपभोक्तावादी मानवीय वृत्तियों के विरुद्ध 'कलम' नामक शस्त्र तैयार किया। यह शस्त्र सज्जन व्यक्तियों को समझने-बूझने में सार्वभौमिक तौर पर मजबूर करती है।

इक्कीसवीं सदी के बाज़ार तंत्र में निर्मम व्यवसायीकरण हो रहा है। 'यूस एण्ड थ्रो' की अमानवीय संस्कृति बाज़ार की सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में स्त्री की माँग करता है। उर्मिला शिरीष की कहानी "उसका अपना रास्ता" इसी चकाचौंध से आकर्षित स्त्री की कहानी है। बाज़ारी कूटनीति ने स्त्री को पुतला बना दिया है। जाने-अनजाने बाज़ार में पदार्थ बेचती स्त्री खुद नग्नता रूपी पदार्थ बनी खड़ी है। आर्थिक लाभ और ऐश्वर्य के लिए वृन्दा कहानी में 'शोहरत' और 'ग्लेमर' के पीछे भागती है। बहुराष्ट्र कंपनियाँ ऐसे ही लोगों की ताक में है। शरीर के साथ-साथ यह बाज़ारवाद, व्यक्ति की आत्मा को भी मतलबी बना देता है। वृन्दा को भी अपनी बीमार दादी अस्पताल में बोझ लगने लगती है। सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में नारी के यौन शोषण का ज़िक्र कहानी में होता है। वृन्दा चाहती है, "पैसा, ग्लैमर, नाम, शोहरत। आगर मैं मिस इण्डिया बन गयी, तो मेरा नाम भी चर्चा में आ जाएगा।...ढ़ेर सारा पैसा, विज्ञापन..."।[1.] संस्कृति आज खुद एक बाज़ार बनती जा रही है। "प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, साहित्य हो या सिनेमा, ज्ञान और मनोरंजन के समस्त क्षेत्रों में सांस्कृतिक वर्चस्व की एक विश्वव्यापी लड़ाई छिड़ गयी है। इस लड़ाई में 'सब जायज़ है' और 'सब चलता है' की नितांत अंधी और अनैतिक नीति के आधार पर सत्य को असत्य से, ज्ञान को अज्ञान से, सूचना को गलत सूचना से, प्रेम को घृणा से, मनुष्यता को बर्बरता से और संस्कृति को अपसंस्कृति से अपदस्थ किया जा रहा है।"[2.] मानव लगातार घटित त्रासदियों की विविध श्रृंखलाओं को विविध क्षेत्रों में एवं सार्वभौमिक आयाम में देखता है। व्यक्ति की हैसियत मात्र एक 'चीज़' की है जिसे कहीं भी कभी भी आसानी से भूला जा सकता है। चन्दन पाण्डेय की "भूलना" इस भयानक सोच का साक्षात्कार कराती है। कहानी के केन्द्र में मध्यवर्गीय परिवार का बेटा गुलशन है जो बड़ा होनहार लड़का है। जिसकी नौकरी परिवारवालों के आशाओं की पूर्ति की दुकान थी, जहाँ गुलशन कोई फैसला नहीं ले सकता था। उन लोगों के बीच गुलशन मात्र साधन बनकर रह गया है। कहानी का 'मैं' सोचता है- "भाई को लेकर जो हमारी सबसे क्रूर ख्वाइश थी, वह अमीर बन जाने की थी।"[3.] गुलशन अपनी सभी अभिरुचियों से वंचित रह जाता है। छोटा बेरोज़गार भाई गुलशन के ज़रिए अपनी मंज़िल पाना चाहता है। परिवार का हर सदस्य अपने खोये स्वभाव में रहते हैं। धीरे-धीरे गुलशन परिवार को और परिवार गुलशन को भूल जाता है। घरवाले यह भी भूल जाते हैं कि वह एक मानव है, जीता-जागता, स्वप्न और आशाओं से भरा संवेदनायुक्त मानव। किन्तु इस तरह 'भूलने' की प्रक्रिया से वे अनभिज्ञ भी हैं। कहानी में माँ-बाप का कथन देखिए-"गुलशन के पढ़ते रहने को लेकर हमारी खुशी इतनी ज़्यादा थी कि हम कुछ और देखकर भी नहीं देख पा रहे थे।"[4] उन्हीं की कहानी "सिटी पब्लिक स्कूल" वाराणसी के ऐसे स्कूल का ज़िक्र करती

है जो प्राइवेट है और अभिभावकों से मोटे तौर पर रक़म पाकर ही शिक्षा देती है। बाज़ार तंत्र में शिक्षा ने भी मानवीयता खो दी है।

राकेश भारतीय की कहानी "अमेरिका के चपरासी" के ब्राह्मण वंशज 'रमेश' और राजपूत वंशज 'धनंजय' ऐसे ही 'कॉल सेंटर्स' में काम करनेवाले हैं। इन सेंटर्स में भारतीय संस्कृति के बदलाव का प्रतीकात्मक ढ़ंग प्रस्तुत है। ट्रेनिंग के दौरान दोनों अमरीकियों के अंग्रेज़ी पैमाने में खरे उतरने के लिए ज़बान को घिस-घिसकर ट्रेनिंग देते हैं। मानसिक दबाव में काम करना मजबूरी बन जाती है। अमेरिकी जीवन के अनुसार अपना दैनिक जीवन रूपायित करना होता है। रात को जगना, सुबह सोना। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। रमेश और धनंजय जैसे स्वाभिमानी, संवेदनशील युवकों को अपने इज़्ज़त की धज्जियाँ उड़ते हुए महसूस होती है। एक बार तो अमरीकी महिला धनंजय को गाली दे देती है। परंतु 'कस्टमर कितने भी बेहुदे ढ़ंग से बात करें जवाब संयत होकर देना' वाली हिदायत चुप करा देती है। मानसिक तौर पर वह टूटने लगता है। "कभी दीवार पर उसे वह पुश्तैनी तलवार दिखती थी जिसे विजयदशमी के दिन हर वर्ष पूजा जाता था और साथ ही तलवार का वह जंग लगा भाग भी दिखता था जिस पर पिछली पूजा के दौरान धनंजय की दृष्टि टिकी थी।...और दीवार से छनकर उसे नयी उम्मीद से भरी माँ की वह हँसी भी आती दिखती थी, जो उन्होंने फोन पर उसकी नौकरी लगने की बात सुनते हुए बिखेरी थी। फिर उसे सिर्फ दीवार दिखती थी-सपाट, बेचेहरा और बेआवाज़।"[5] प्रियदर्शन की कहानी "पेइंग गेस्ट" भी युवा वर्ग के मशीन बन जाने और मानवीय संवेदना के खो देने की कहानी है। उसी प्रकार आधुनिकता में बिखरी स्त्री की अतिसंवेदनशील कहानी है अल्पना मिश्र की "उपस्थिति"। कहानी की नायिका पति के अनमने भावों को समझाती है। वह आज़ादी नहीं पति का प्रेम और संवाद चाहती है। मानवीकरण के संदूक में स्त्री जीवन घिसते-घिसते संवादहीन हो जाता है। नायिका कावेरी काफी कोशिश करती है पर पति से सीधा संवाद नहीं हो पाता। अंत में वह मक्खी से रिश्ता जोड़ लेती है। उसे लाड़ करती है। संवाद करती है। उसी प्रकार कथा के ग़ैरज़रूरी प्रदेश में दाम्पत्य जीवन की हार दिखाई देती है। एक ही छत के नीचे दोनों अकेले हैं, अजनबी हैं। कहानी, अमानवीयता का कारण पूँजीवादी दौर को मानती है। मंजुल भगत की "ब्यूटी सैलून" ऐसी 'मार्केटैज़ेशन' का फार्मुला बताता है जहाँ औरतें ख़ुद को सुंदर बनाने के लिए बार-बार ब्यूटी पार्लर जाती हैं। इसकहानी की नायिका ब्यूटीशियन है। वह ब्यूटी सैलून में रोज़ नया कुछ सीखती है। "निढ़ाल स्त्रियों को ताज़गी और चुस्ती प्रदान करते-करते उसने और भी कुछ सीख लिया है।"[6] कावेरी की "नव प्रसूता"दलित परिवारों में दलित स्त्री शोषण को बयान करती है। इसमें स्त्री को केवल भोग की वस्तु समझने वाले पुरुष

अमानवीयता को वाणी दी गई है। शुभा के साथ ससुराल में बहुत बुरा घटता है। अंत में अपने अधिकारों से सचेत शुभा पति को छोड़ देती है और अपने पैरों पर खड़ी होकर इज़्ज़त की ज़िन्दगी जीने को तैयार हो जाती है। बेटी से कहती है- "तुझे भी मजबूत बनना है मेरी तरह।"[7]

अमिताभ शंकर राय चौधरी की कहानी "नोनाजल" सुनामी में ग्रस्त मछुआरों का चित्रण करती है जो अपना सबकुछ खोकर रिलीफ कैंप में जी रहे हैं। सरकार की ओर से मिलनेवाले रुपये के लिए उनसे रेशन कार्ड आदि पूछा जाता है। जिनके पास केवल पहना हुआ कपड़ा है उनसे कागज़ात पूछना बेईमानी और अमानवीयता ही तो है। बैंक नाव के लिए कर्ज़ देने को तैयार है। मगर एक बार कर्ज़ ले लिया तो वे कहीं के नहीं रहेंगे। क्योंकि मछली पकड़ने के लिए ट्रॉलर चलाने से उन्हें मछलियाँ कम मिलती है। ग़रीबों की टूटी झोंपड़ी बनाने के लिए सरकार के पास पैसा है न समय। किन्तु सुनामी ग्रस्त बड़े-बड़े होटल मकान आसानी से बन जाते हैं। कहानी में मछुआरा सरवनमुत्तु लाचार होकर मज़दूरी करता है। अपने अस्तित्व का विस्थापन उसे असहज बना देता है। वह चिल्ला उठता है- "हम रजवाड़ों के पूत हैं- भीम, अर्जुन की देह में हमारा खून है।"[8] "नोनाजल" कृत्रिम संस्कृति का बख़ान करता है जो सार्वभौमिक होती जा रही है जिसमें पड़कर प्राकृतिक संस्कृति का ह्रास हुआ है। निरुपमा सेवती की कहानी "बद्धमुष्टि" में स्त्रियों पर स्थापित नैतिक न्यायविधान का विरोध है। यह कहानी अपसंस्कृति में जीकर लड़कियों को संस्कृति की सूली पर चढ़ाने की ईमानदारी पर व्यंग्य करती है। साथ ही स्त्री पर होते सार्वभौमिक अत्याचार को भी प्रस्तुत करता है। कुसुम अंसल की कहानी "इंतज़ार" पति-पत्नी द्वारा खुद को समकालीन दौर में किसी भी तरह फिट कर देने की त्रासदी का सार्वभौमिक चित्रण करता है। कहानी की देविशा तरक्की के लिए अपने मालिक से यौन संबंध स्थापित कर लेती है। किन्तु जब तरक्की नहीं होती तो दोनों पति-पत्नी परेशान हो जाते हैं। पश्चिम की हेलो-हाय संस्कृति, भोग प्राधान्य डेटिंग-किसिंग रॉक शो, क्लब, मदिरापान, कॉल गलर्स आदि बाज़ार को चित्रित करती कहानियों में मंजुल भगत की "नालायक बहू" मणिका मोहिनी की "हम बुरे नहीं थे", चित्रा मुद्गल की "वाइफ स्वेपी" आदि शामिल हैं।

संक्षेप में समकालीन कहानियाँ मानवतावाद के दायरे से निकलकर अमानवीय दुर्दशा का दृश्य चित्रण करा रही हैं। सार्वभौमिक दृष्टि से बदलता दौर मानवीय संवेदना का स्पंदन खो बैठा है, जिसे पुनः गठित करने का प्रयास कहानीकारों ने किया है। उपनिवेशी बाज़ार तंत्र में खुद को कर्ता-धर्ता समझनेवाला मानव, मानवतावाद के सही माइने भूलता जा रहा है।

सार्वभौमिक परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी कहानीकार इसे याद दिलाने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ-सूचि

1. उर्मिला शिरीष, उसका अपना रास्ता, पृ. 117.
2. रमेश उपाध्याय और संज्ञा उपाध्याय, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, पृ. 8.
3. चंदन पाण्डेय, भूलना, पृ. 52.
4. वही, पृ. 55.
5. राकेश भारतीय, अमेरिका के चपरासी, वसुधा, अक्टूबर-दिसंबर 2007, पृ. 152.
6. मंजुल भगत, ब्यूटी सैलून, कितना छोटा सफर, पृ. 96.
7. दलित साहित्य (वार्षिकी) 1999, कावेरी-नव प्रसूता, पृ. 33.
8. अमिताभ शंकर राय चौधरी, नोनाजल, समकालीन भारतीय साहित्य, मई-जून 2008, पृ.100.

IMPACT FACTOR : 5.355

E-ISSN : 2455-1511

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Mrs./... डॉ. सीमा चन्द्रन.....

Has contributed a paper as author / co-author to

Sanskruti International Multidisciplinary Research Journal

(INDEXED, PEER-REVIEWED JOURNAL)

Title....मानवतावाद के विशेष संदर्भ में समकालीन कहानीकारों की सार्वभौमिक दृष्टि.....

And has got published in Volume ...V.... Issue ...III...March 2020.

The Editor-in-Chief and The Editorial Board appreciate the intellectual Contribution of the author /co-author.

Executive Editor
SIMRJ

Editor-In-Chief
SIMRJ